

तर्ज- बहुत प्यार करते है

इश्क मेरी रूह का है तुमसे खसम
पता तब चला जब मिला यह इलम

1- इलमें लदुन्नी से पहचान की
मेहर महबूब ने मुझ पर करी
तड़प मेरे दिल की अब होगी न कम

2- तेरे चरणों को मैं चूमती रहूँ
जामें इश्क पी के झूमती रहूँ
कायम हो मस्ती मेरे प्रीतम

3- सुख दोनों ठौरों का तुमने दिया
सदा अरस परस हो मेरे पिया
तू ही तू है मेरे खसम